सफलता की कहानी

सोनुआ गाँव की अंजना प्रधान ने कौशल विकास के सहारे जिंदगी की उड़ान भरी

अगर हुनर है तो इंसान गिर कर भी उठ सकता है, चल सकता है और जिंदगी के सफर में लंबी दौड़ में भी शामिल हो सकता है। अपनी जिंदगी को सजाना–संवारना और इसमें खुशियाली के रंग भरना इंसान के ही हाथों में होता है। ऐसी ही एक कहानी है सोनुआ गाँव के सुलोचना प्रधान की। पश्चिमी सिहंभूम जिला (मुख्यालय चाइबासा) के सोनुआ गाँव की सुलोचना प्रधान की परवरिश पूरी तरह से ग्रामीण परिवेश में हुई। पिता श्री भास्कर प्रधान घरेलु जीवन–यापन और जीविकोपार्जन के लिए खदानों की बड़ी गाड़ियों (ट्रक/मिनी ट्रक) में सामान चढ़ाने एवं उतारने की मजदूरी किया करते थे। महज छोटी सी मासिक आमदनी से अंजना के परिवार में माता–पिता, और तीन बहनों की जीवन लीला चल रही थी। घर की माली हालत के बीच किसी सदस्य की पढ़ाई लिखाई या बाहर जाकर कुछ नया करने का विचार किसी ने सपने में भी नहीं सोचा। सबसे बड़ी बहन ने किसी तरह से गाँव के ही सरकारी स्कूल में छठी तक की पढ़ाई पूरी की। दूसरी बहन ने स्कूल के अंदर जाने की हिम्मत नहीं जुटाई। लेकिन तीसरी बहन स्वयं अजंना और उसकी छोटी बहन ने जैसे तैसे मैट्रिक तक की पढ़ाई पूरी कर गाँव से निकलकर 30 किलोमीटर का सफर तय कर चाईबासा (पश्चिम सिंहभूम जिला मुख्यालय) जाकर इंटर की पढ़ाई शुरू की। इसी बीच अंजना को कॉलेज के दोस्तों के माध्यम से कौशल विकास कार्यक्रम के बारे में पता चला। अंजना ने बिना देर किए हुए राजधानी राँची का रूख किया और टाटीसिलवे स्थित All Institute of Local Self Government द्वारा संचालित दीनदयाल उपाध्याय कौशल केंद्र में मेडिकल परिक्षेत्र के कौशल प्रशिक्षण के लिए नामांकन ले लिया। इंटर तक की पढ़ाई हिंदी माध्यम से करने वाली अंजना को मेडिकल परिक्षेत्र की प्रशिक्षण लेने में काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। अधिकांश शब्दावली अंग्रेजी में रहने के बावजूद अंजना ने अपना छः माह का लिखित और व्यवहारिक कौशल प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण किया।

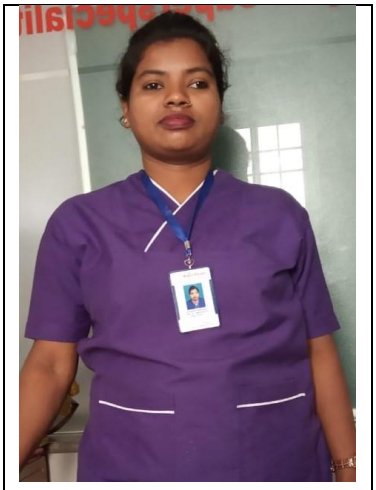

प्रशिक्षण के उपरांत अप्रैल 2019 में केंद्र में ही आयोजित कैम्पस प्लेसमेंट काय्रक्रम में अंजना का चयन राँची के प्रतिष्ठित रामप्यारी ऑर्थोपेडिक अस्पताल में General Duty Assistant के रूप में रू0 7000/– (सात हजार रूपये) प्रतिमाह पर हो गया। अपनी कार्यकुशलता से नौकरी के महज चार माह बाद ही अंजना ने प्रबंधन का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और वर्तमान में अंजना का मासिक वेतन बढ़ाकर 9000/– रू0 प्रतिमाह कर दिया गया है। यद्यपि यह रकम इतनी भी ज्यादा नहीं कि अंजना के सभी सपने पूरे हों लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास से अंजना अपनी कल्पनाओं को उड़ान दे रही है।

इधर अपनी लगनशीलता के कारण कम समय में ही अंजना प्रधान ने अस्पताल में भी अपनी खास पहचान बना ली है। अस्पताल प्रबंधन अंजना की सेवा भावना और कार्यकुशलता के कायल हो रहें हैं। तीन माह के छोटे कार्यकाल में ही अंजना ने अस्पताल प्रबंधन एवं अपने वरिष्ठ कर्मचारियों का दिल जीत लिया है। अस्पताल में आने वाले मरीज एवं उनके परिजन भी अंजना की सेवा भावना की तारीफ करते हैं।

अंजना प्रधान की सफलता की कहानी झारखण्ड की एक बेटी की छोटी सी आशा का समापन नहीं है बल्कि यह राज्य की हजारों बेटियों के पैरों पर खड़े होने के सफर का एक शानदार आगाज है। झारखण्ड कौशल विकास मिशन सोसाईटी की ओर से अंजना प्रधान को उनके उज्जवल भविष्य के लिए अन्नंत शुभकामनाएँ।

****